देव सिंह बिष्ट परिसर नैनीताल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के छात्र–संतुष्टि का उनकी शैक्षिक एवं वैयक्तिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में अध्ययन

डॉ रिज़वाना सिद्दीकी
असि.प्रोफेसर
शिक्षा संकाय
एस0एस0जे0 परिसर
कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल

अखिलेश कुमार उपाध्याय
शोध छात्र
शिक्षा संकाय
एस0एस0जे0 परिसर
कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल

शोध सारांश :–

प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के छात्र–संतुष्टि पर लिंग (छात्र तथा छात्राएँ), परिवेश (ग्रामीण तथा शहरी) तथा अध्ययन संकाय (कला, विज्ञान तथा वाणिज्य) के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु वर्णनात्मक शोध विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि के द्वारा 370 विद्यार्थियों को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया है। समंकों के संकलन हेतु मनोज कुमार तथा डॉ0 दीपा मेहता द्वारा निर्मित 'छात्र–संतुष्टि मापनी' का उपयोग किया गया है। प्राप्त समंकों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा 2X3X3 एनोवा का उपयोग किया गया तथा निष्कर्ष पाया गया कि छात्र–संतुष्टि पर लिंग, परिवेश तथा अध्ययन संकाय का सार्थक प्रभाव पाया गया, तथा छात्र संतुष्टि हेतु लिंग, परिवेश तथा अध्ययन संकाय के मध्य सार्थक अन्तःक्रिया प्रभाव पाया गया।

प्रमुख शब्दावली – छात्र–संतुष्टि, परिवेश, अध्ययन संकाय, अन्तःक्रिया।

प्रस्तावना :–

विश्वविद्यालय ज्ञान के अथाह सागर हैं विद्यार्थी यहाँ के वातावरण से ज्ञानपुँज का निर्माण करते हैं। वर्तमान परिवर्तनशील, जटिल व प्रतिस्पर्धी परिस्थितियों की मांगों के अनुरूप विद्यार्थी परिसर में रहकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। विद्यार्थी अपने द्वारा चयनित पाठ्यक्रम के अनुरूप यदि परिसर वातावरण को उपयुक्त समझते हैं तो वे स्वअभिप्रेरित होकर स्वअधिगम की ओर अग्रसर होते हैं। यदि परिसर वातावरण विद्यार्थियों द्वारा चयनित पाठ्यक्रम के अनुरूप नहीं है तो ऐसी परिस्थितियों में विद्यार्थियों के अन्दर असंतुष्टि की भावना उत्पन्न होती है, तथा वे अन्य विश्वविद्यालयों में अवसर की तलाश में रहते हैं। परन्तु यदि विद्यार्थी इसी प्रकार की अनुपयुक्त परिसर वातावरण में रहते हैं तो वे एक प्रकार की नकारात्मक अभिवृत्ति की ओर बढ़ते हैं तथा तनाव में रहते हैं। शैक्षिक संतुष्टि से तात्पर्य छात्रों द्वारा विद्यालयों में घटित क्रियाकलापों से प्राप्त अनुभव के प्रति उनके कुल दृष्टिकोणों से है। छात्र कुछ निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु विद्यालयों में आते हैं। वहाँ छात्रों की रूचि योग्यता तथा आवश्यकता का यथासंभव ध्यान रखते हुए निश्चित समय, निश्चित पाठ्यचर्या, निश्चित शिक्षण विधियों द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है। डीवी ने भी कहा है कि विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट पर्यावरण है जहाँ जीवन के निश्चित गुणों और कुछ विशेष प्रकार की क्रियाओं एवं व्यवसायों की शिक्षा निश्चित उद्देश्यों, निश्चित पाठ्यचर्या, निश्चित शिक्षण विधियों आदि के प्रति छात्रों का दृष्टिकोण

ही छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि विद्यालयों से सम्बन्धित समस्त क्रियाकलापों के प्रति छात्रों का कुल दृष्टिकोण ही छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि है। पाठ्यचर्या, विषय आवंटन, समय सारणी, अध्यापकगण, शिक्षण युक्तियाँ, समूह, प्रशासन, परीक्षा प्रणाली, पुस्तकालय, वाचनालय आदि ऐसे अनेक पक्ष व क्रियाकलाप हैं जो छात्रों के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकते हैं तथा जिनके फलस्वरूप छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि–असंतुष्टि परिवर्तित हो सकती है (सिंह, 2008)। प्रस्तुत शोध कार्य में देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत स्नातक स्तर V सेमेस्टर के विद्यार्थियों के छात्र–संतुष्टि का लिंग, (छात्र एवं छात्राएँ), परिवेश (ग्रामीण एवं शहरी) तथा अध्ययन संकाय (कला, विज्ञान तथा वाणिज्य) के संदर्भ में अध्ययन किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :–

मधुमति (2002), ने 'पूर्वी उत्तर प्रदेश के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक संतुष्टि का अध्ययन' विषय पर सर्वेक्षण विधि का उपयोग करते हुए शोध कार्य किया। निष्कर्ष पाया कि माध्यमिक स्तर के छात्र तथा छात्राओं के शैक्षिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया, माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्रों के शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक संतुष्टि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया, कला व मानवीकी, कॉमर्स, गृहविज्ञान, एवं दृश्य कला वर्ग के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक रूचि तथा शैक्षिक संतुष्टि में सहसम्बन्ध नहीं पाया गया तथा विज्ञान समूह की छात्राओं के शैक्षिक रूचि तथा शैक्षिक संतुष्टि में सह सम्बन्ध नहीं पाया गया।

उपाध्याय (2005) ने 'स्ववित्तपोषित एवं अनुदान प्राप्त महाविद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण के संदर्भ में छात्रों के स्वप्रत्यय, शैक्षिक संतुष्टि तथा निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर सर्वेक्षण विधि का उपयोग करते हुए शोध कार्य किया। निष्कर्ष पाया कि स्ववित्तपोषित तथा अनुदान प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक संतुष्टि तथा स्वप्रत्यय के मध्यम एवं निम्न छात्र–छात्राओं के मध्य सार्थक अंतर पाया गया, स्ववित्तपोषित एवं अनुदानप्राप्त महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मण्डल (2015), ने ' परसिव्ड सर्विस क्वालिटी एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन स्टुडेन्ट्स सैटिस्फैक्शन विद रेफरेन्स टु मैनेजमेन्ट एजुकेशन इन कोलकाता' विषय पर वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग करते हुए शोध कार्य किया। निष्कर्ष पाया कि रोजगार सेवाएँ एवं शिक्षकों का शिक्षण–अधिगम में सहयोग छात्र–संतुष्टि को प्रभावित करने वाले अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक हैं, पुस्तकालय सुविधाएँ, सूचना सेवा, तथा अन्य कारकों का छात्र–संतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया तथा विद्यार्थियों को प्रदत्त सुविधाओं का छात्र संतुष्टि से सार्थक सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

धाकेन तथा आफ्राह (2016), ने 'सैटिस्फैक्शन ऑफ स्टुडेन्ट्स एण्ड एकेडमिक परफॉर्मेन्स इन बन्देर यूनिवर्सिटी' विषय पर क्रॉस–सेक्शनल सर्वेक्षण विधि के माध्यम से अध्ययन किया। निष्कर्ष पाया कि शैक्षिक संतुष्टि तथा शैक्षिक निष्पत्ति में उच्च सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया तथा शैक्षिक संतुष्टि से छात्र अपव्यय व अवरोधन में कमी पायी गयी।

प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य :–

1. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् छात्र तथा छात्राओं के छात्र–संतुष्टि का अध्ययन करना।
2. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के छात्र–संतुष्टि का परिवेश (ग्रामीण एवं शहरी) के संदर्भ में अध्ययन करना।

3. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के छात्र–संतुष्टि का अध्ययन संकाय (कला, विज्ञान तथा वाणिज्य) के संदर्भ में अध्ययन करना।
4. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के छात्र–संतुष्टि हेतु लिंग, परिवेश तथा अध्ययन संकाय के मध्य अन्तःक्रिया प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोधकार्य की परिकल्पनाएँ :–

H_1. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् छात्र तथा छात्राओं के मध्य छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_2. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के मध्य छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_3. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् कला संकाय, विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के मध्य छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_4. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् ग्रामीण तथा शहरी छात्र–छात्राओं के मध्य छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_5. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् कला संकाय, विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय के ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के मध्य छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_6. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् कला संकाय, विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय के छात्र–छात्राओं के मध्य छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_7. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के छात्र–संतुष्टि हेतु लिंग, परिवेश तथा अध्ययन संकाय के मध्य सार्थक अन्तःक्रिया प्रभाव नहीं है।

शोध विधि :– प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णनात्मक शोध विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या तथा न्यादर्श :– प्रस्तुत शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् स्नातक स्तर के पंचम सेमेस्टर के विद्यार्थियों को सम्मिलित (1185) किया गया है। स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि का प्रयोग करते हुए 370 विद्यार्थियों (150 कला, 170 विज्ञान तथा 50 वाणिज्य; 104 छात्र तथा 266 छात्राएँ; 146 ग्रामीण तथा 224 शहरी) का चयन न्यादर्श हेतु चयनित किया गया है।

शोध उपकरण :– प्रस्तुत अध्ययन में मनोज कुमार तथा डा0 दीपा मेहता द्वारा निर्मित 'छात्र–संतुष्टि मापनी' का उपयोग का उपयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण तथा व्याख्या :–

देव सिंह बिष्ट परिसर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की छात्र–संतुष्टि का उनकी शैक्षिक एवं वैयक्तिक पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में अध्ययन के लिए देव सिंह बिष्ट परिसर से चयनित विद्यार्थियों में लिंग (छात्र एवं छात्राएँ), परिवेश (ग्रामीण व शहरी),

तथा अध्ययन संकाय (कला, विज्ञान व वाणिज्य) के आधार पर विभाजित समूहों के छात्र–संतुष्टि स्तर के मध्यमान तथा मानक विचलन का विवरण निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या – 1

लिंग, परिवेश तथा अध्ययन संकाय के आधार पर विभाजित समूहों का छात्र–संतुष्टि पर मध्यमान व मानक विचलन

चर		संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
परिवेश	शहरी	224	3.057	0.6062
	ग्रामीण	146	3.3068	0.6314
लिंग	छात्र	104	3.0497	0.6999
	छात्रा	266	3.1971	0.5931
अध्ययन संकाय	विज्ञान	170	3.087	0.6072
	कला	150	3.2450	0.6644
	वाणिज्य	50	3.1205	0.5555

ग्राफ

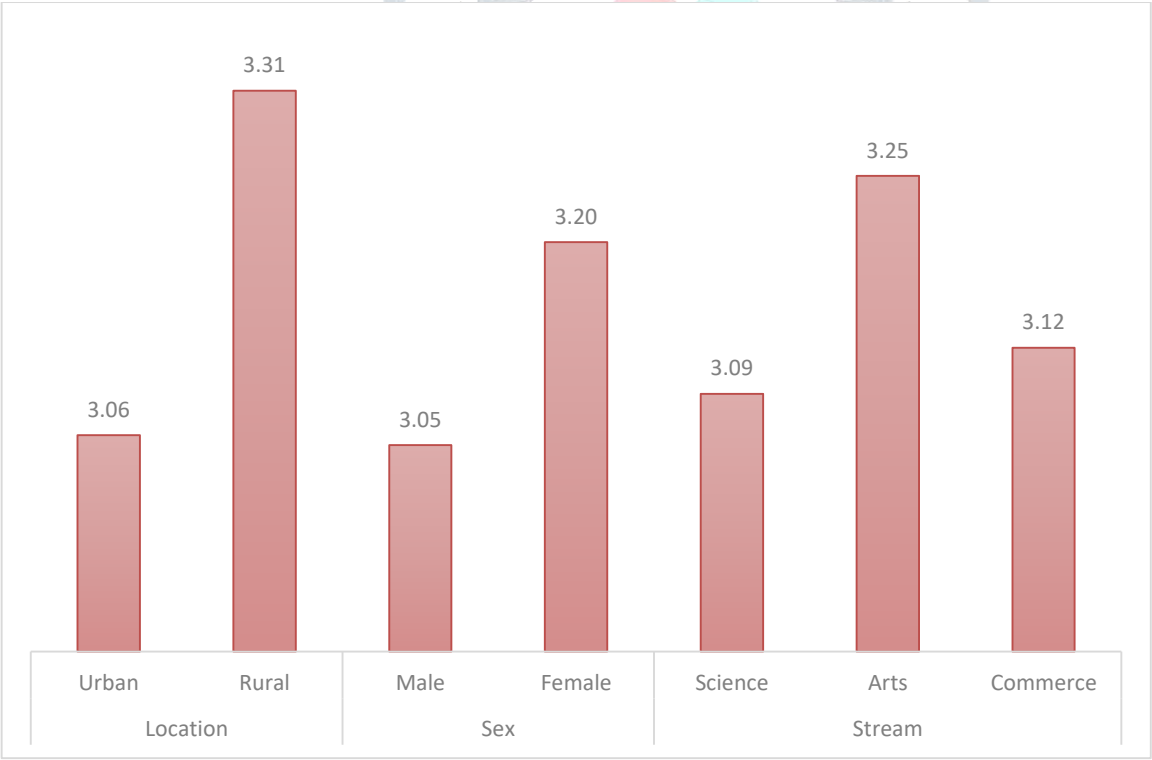

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि छात्र–संतुष्टि स्तर पर लिंग, परिवेश तथा अध्ययन संकाय के आधार पर विभाजित सभी समूहों का मध्यमान तथा मानक विचलन भिन्न–भिन्न है। अवलोकित मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के परीक्षण हेतु प्रसरण विश्लेषण (2x2x3 कारकीय प्रारूप) विधि का उपयोग किया गया है, जिसका विवरण निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया हैं

तालिका संख्या – 2

प्रसरण विश्लेषण परिणाम

प्रसरण स्रोत	कुल वर्ग योग	df	मध्यमान वर्ग	F	सार्थकता ρ
परिवेश	4.524	1	4.524	12.349	0.00**
लिंग	1.773	1	1.773	4.839	0.03*
अध्ययन संकाय	2.385	2	1.192	3.255	0.04*
परिवेश × लिंग	0.028	1	0.028	0.076	0.78
परिवेश × अध्ययन संकाय	0.769	2	0.385	1.050	0.35
लिंग × अध्ययन संकाय	0.345	2	0.172	0.470	0.63
परिवेश × लिंग × अध्ययन संकाय	3.386	2	1.693	4.622	0.01*
त्रुटि	131.153	358	0.366		
योग	145.284	369			

***सार्थकता स्तर .05 ** सार्थकता स्तर .01**

मुख्य प्रभाव :–

1. **लिंग तथा छात्र–संतुष्टि :–** उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि छात्र तथा छात्राओं के अवलोकित मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता का परीक्षण करने पर परिगणित F-अनुपात का मान 4.839 प्राप्त हुआ तथा 'ρ' मान 0.03 है जो सार्थकता स्तर .05 से कम है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त होती है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर छात्र तथा छात्राओं के छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। तालिका संख्या (1) से स्पष्ट है कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में छात्र–संतुष्टि अधिक पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि छात्र–संतुष्टि पर लिंग का सार्थक प्रभाव पाया गया।
2. **परिवेश तथा छात्र–संतुष्टि :–** उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के अवलोकित मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता का परीक्षण करने पर परिगणित F-अनुपात का मान 12.349 प्राप्त हुआ तथा 'ρ' मान 0.00 है जो सार्थकता स्तर .01 से कम है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त होती है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। तालिका संख्या (1) से स्पष्ट है कि शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा ग्रामीण विद्यार्थियों में छात्र–संतुष्टि अधिक पायी गयी। अतः कहा जा सकता है कि छात्र–संतुष्टि पर परिवेश का सार्थक प्रभाव पाया गया।
3. **अध्ययन संकाय तथा छात्र–संतुष्टि :–** उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन संकाय (कला, विज्ञान तथा वाणिज्य) के आधार पर विभाजित समूहों के अवलोकित मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता का परीक्षण करने पर परिगणित F- अनुपात का मान 3.255 प्राप्त हुआ तथा 'ρ' मान .04 है जो सार्थकता स्तर .05 से कम है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त होती है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर विद्यार्थियों की छात्र–संतुष्टि में उनके अध्ययन संकाय (कला, विज्ञान तथा वाणिज्य) के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि छात्र–संतुष्टि पर अध्ययन संकाय का सार्थक प्रभाव पाया गया। समूहों के मध्य अन्तर की

सार्थकता के परीक्षण हेतु पोस्ट हॉक शेफी परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसका विवरण निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या – 3

शेफी पोस्ट हॉक परीक्षण तालिका

अध्ययन संकाय		मध्यमान अन्तर (I-J)	मानक त्रुटि	सार्थकता ρ
I	J			
विज्ञान	कला	0.1579*	0.0678	0.048*
	वाणिज्य	0.0333	0.0974	0.943
कला	विज्ञान	0.1579*	0.0678	0.048*
	वाणिज्य	0.1246	0.0988	0.453
वाणिज्य	विज्ञान	0.0333	0.0974	0.943
	कला	0.1246	0.0988	0.453

***सार्थकता स्तर .05**

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि कला संकाय तथा विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों के मध्य 'ρ' मान 0.048 है जो कि सार्थकता स्तर .05 से कम है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त होती है। विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के मध्य 'ρ' मान 0.943 है जो कि सार्थकता स्तर .05 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। कला संकाय तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के मध्य 'ρ' मान 0.453 है जो कि सार्थकता स्तर .05 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट होता है कि

1. कला संकाय तथा विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मध्य छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मध्य छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. कला संकाय तथा वाणिज्य संकाय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मध्य छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अतः कहा जा सकता है कि कला संकाय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की छात्र–संतुष्टि स्तर विज्ञान संकाय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से अधिक पाया गया।

अन्तःक्रिया प्रभाव :–

1. **लिंग तथा परिवेश :–** उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र एवं छात्राओं) तथा परिवेश (ग्रामीण एवं शहरी) के आधार पर विभाजित समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता का परीक्षण करने पर F-अनुपात 0.076 प्राप्त हुआ तथा 'ρ' मान 0.78 है जो सार्थकता स्तर .05 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। इसका तात्पर्य यह है कि विद्यार्थियों के परिवेश तथा लिंग छात्र–संतुष्टि हेतु प्रभावी अन्तःक्रिया

नहीं करते हैं। प्रस्तुत विश्लेषण से स्पष्ट है कि छात्र तथा छात्राओं के छात्र–संतुष्टि में उनके परिवेश के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अथवा विद्यार्थियों के छात्र–संतुष्टि हेतु लिंग तथा परिवेश का सार्थक अन्तःक्रिया प्रभाव नहीं पाया गया।

2. **परिवेश तथा अध्ययन संकाय :–** उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिवेश तथा अध्ययन संकाय (कला, विज्ञान तथा वाणिज्य) के आधार पर विभाजित समूहों के छात्र–संतुष्टि स्तर के अवलोकित मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता का परीक्षण करने पर परिगणित F-अनुपात 1.050 प्राप्त हुआ तथा 'ρ' मान 0.35 है जो सार्थकता स्तर .05 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। इसका तात्पर्य यह है कि विद्यार्थियों के परिवेश तथा अध्ययन संकाय छात्र–संतुष्टि को प्रभावित करने हेतु अन्तःक्रिया नहीं करते हैं। प्रस्तुत समंकों के विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट है कि कला संकाय, विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के छात्र–संतुष्टि में उनके परिवेश के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अथवा छात्र–संतुष्टि को प्रभावित करने हेतु परिवेश एवं अध्ययन संकाय का सार्थक अन्तःक्रिया प्रभाव नहीं पाया गया।

3. **अध्ययन संकाय तथा लिंग :–** उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन संकाय (कला, विज्ञान तथा वाणिज्य) तथा लिंग (छात्र एवं छात्राएँ) के आधार पर विभाजित समूहों के छात्र–संतुष्टि स्तर के अवलोकित मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता का परीक्षण करने पर परिगणित F-अनुपात 0.470 प्राप्त हुआ तथा 'ρ' मान 0.63 है जो कि सार्थकता स्तर .05 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। इसका तात्पर्य यह है कि छात्र–संतुष्टि हेतु अध्ययन संकाय तथा लिंग का अन्तःक्रिया प्रभाव नहीं हैं। प्रस्तुत समंकों के विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट है कि कला संकाय, विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय के छात्र तथा छात्राओं के छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अथवा छात्र–संतुष्टि हेतु अध्ययन संकाय व लिंग का सार्थक अन्तःक्रिया प्रभाव नहीं पाया गया।

4. **परिवेश, लिंग तथा अध्ययन संकाय :–** उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिवेश (ग्रामीण तथा शहरी), लिंग (छात्र एवं छात्राएँ) तथा अध्ययन संकाय के आधार पर (कला, विज्ञान तथा वाणिज्य) के आधार पर विभाजित समूहों के छात्र–संतुष्टि स्तर के अवलोकित मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता का परीक्षण करने पर परिगणित F- अनुपात 4.622 प्राप्त हुआ तथा 'ρ' मान 0.01 है जो सार्थकता स्तर .05 से कम है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त होती है। इसका तात्पर्य यह है कि छात्र–संतुष्टि हेतु लिंग, परिवेश तथा अध्ययन संकाय का सार्थक अन्तःक्रिया प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत समंकों के विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट है कि कला संकाय, विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय के छात्र तथा छात्राओं के छात्र–संतुष्टि में उनके परिवेश के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया अथवा अध्ययन संकाय, परिवेश तथा लिंग का छात्र–संतुष्टि हेतु सार्थक अन्तःक्रिया प्रभाव पाया गया।

परिणाम :–

1. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् छात्र तथा छात्राओं के मध्य छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के मध्य छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् कला संकाय, विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के मध्य छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।

4. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् ग्रामीण तथा शहरी छात्र–छात्राओं के मध्य छात्र–संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
5. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् कला संकाय, विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय के ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के मध्य छात्र–संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
6. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् कला संकाय, विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय के छात्र–छात्राओं के मध्य छात्र–संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
7. देव सिंह बिष्ट परिसर, नैनीताल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के छात्र–संतुष्टि हेतु लिंग, परिवेश तथा अध्ययन संकाय के मध्य सार्थक अन्तःक्रिया प्रभाव नहीं पाया गया।

निष्कर्ष तथा शैक्षिक उपयोगिता :–

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट है कि लिंग (छात्र तथा छात्राएँ), परिवेश (ग्रामीण एवं शहरी), तथा अध्ययन संकाय (कला, विज्ञान तथा वाणिज्य) का विद्यार्थियों के छात्र–संतुष्टि पर सार्थक प्रभाव पाया गया। तथा छात्र–संतुष्टि हेतु लिंग, परिवेश तथा अध्ययन संकाय के मध्य सार्थक अन्तःक्रिया प्रभाव पाया गया। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि लिंग, परिवेश तथा अध्ययन संकाय के आधार पर विभाजित समूहों के मध्य छात्र–संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। तालिका संख्या (1) के आधार पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों की छात्र–संतुष्टि शहरी विद्यार्थियों से अधिक पायी गयी, छात्राओं की छात्र संतुष्टि छात्रों से अधिक पायी गयी तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों की छात्र–संतुष्टि स्तर विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों से अधिक पायी गयी। अतः परिसर में अध्ययनरत् छात्रों, ग्रामीण विद्यार्थियों तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की संतुष्टि स्तर को बढ़ाने हेतु अतिरिक्त प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। इस हेतु यह भी कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय परिसर में प्रदान की जा रही सेवाओं और सुविधाओं का पृष्ठपोषण प्राप्त करने हेतु समय–समय पर 'छात्र केन्द्रित विचार विमर्श का आयोजन करना चाहिए। पाठ्यक्रम, पाठ्यसहगामी क्रियाएँ, विषय अधिगम, समय सारणी, परीक्षा प्रणाली, पुस्तकालय, परिसर वातावरण तथा अनुशासन आदि ऐसे पक्ष व क्रियाकलाप हैं जो छात्रों के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकते हैं तथा जिनके फलस्वरूप छात्रों की शैक्षिक संतुष्टि–असंतुष्टि परिवर्तित हो सकती है अतः इन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची :–

एल्केन, एल0आर0 (2003) : साइकोलॉजिकल टेस्टिंग एण्ड एसेसमेन्ट, बोस्टनः एलिन एण्ड

बैकन

उपाध्याय, त्रिपुरारी (2005) : स्ववित्तपोषित एवं अनुदान प्राप्त महाविद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण के संदर्भ में छात्रों के स्व प्रत्यय, शैक्षिक संतुष्टि तथा निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षा शास्त्र में पी–एच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, 26 मई 2018, http:// sg.inflibnet.ac.in

कौर, चरनजीत (1999) : ए स्टडी ऑफ एक्सपेक्टेशन्स एण्ड सैटिस्फैक्शन लेवेल ऑफ स्टुडेन्ट्स ऑफ मैनेजमेन्ट प्रोग्राम्स ऑफ इग्नू इन रिलेशन टु कैरेक्टरिस्टिक्स् ऑफ स्टुडेन्ट्स, शिक्षा शास्त्र में पी–एच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, एस एन डी टी महिला विश्वविद्यालय, 18 मई 2019, http:// sg.inflibnet.ac.in

गारेली, गर्लीन (2017) : एट्टीट्यूड ऑफ यूनिवर्सिटी स्टुडेन्ट्स टुवर्ड्स एजुकेशनल नेटवर्किंग थ्रू सोशल मिडिया इन रिलेशन टु एकेडमिक सैटिस्फैक्शन एण्ड स्टडी हैबिट्स, शिक्षा शास्त्र में पी–एच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, पंजाब विश्वविद्यालय, 10 अप्रैल 2019, http:// sg.in.inflibnet.ac.in

धाकेन, महद खालिफ तथा नॉर अब्दुल अफ्राह (2016) : सैटिस्फैक्शन ऑफ स्टुडेन्ट्स एण्ड एकेडमिक परफॉर्मेन्स इन बेनादिर यूनिवर्सिटी, जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड प्रैक्टिस, 7(24), 59–63, 8 जनवरी 2020, http:// www.researchgate.net

पाल, विनोद (2019) : भारत में शोधः शोधार्थियों की समस्याओं का एक अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ ऑल रिसर्च राइटिंग्स, 1(2), 9–15, 5 मई 2020, www.ijarnw.com

फर्गुसन, जी0ए0 तथा वाई, ताकामी (1989) : स्टेटिस्टिकल एनालिसिस इन साइकोलॉजी एण्ड एजुकेशन, न्यूयॉर्कः टाटा मैक्ग्राहिल

बर्लिनर, डी तथा कैल्फी, आर (1996) : इ डी एसः हैण्डबुक ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, न्यूयॉर्कः मैक्मिलन

मण्डल, अबु सईद (2015) : परसिव्ड सर्विस क्वालिटी एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन स्टुडेन्ट्स सैटिस्फैक्शन विद रेफरेन्स टु मैनेजमेन्ट एजुकेशन इन कोलकाता, व्यवसाय प्रशासन में पी0एच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, बर्दवान विश्वविद्यालय, कोलकत्ता, 18 जनवरी 2019, http:// sg.inflibnet.ac.in

मधुमति (2002) : पूर्वी उ0प्र0 के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक संतुष्टि का अध्ययन, शिक्षा शास्त्र में पी–एच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, वी0बी0एस0 पुर्वांचल विश्वविद्यालय, 8 अप्रैल 2019, http:// sg.inflibnet.ac.in

सिंह, अरूण कुमार (2015) : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी

सिंह, अरूण कुमार (2018) : शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पटना

सिंह, सुनाली (2008) : माध्यमिक स्तर के छात्रों के शैक्षिक संतुष्टि, शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तित्व एवं शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन, शिक्षा शास्त्र विभाग में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, 10 जून 2020, http://hdl.handle.net/10603/25371

शर्मा, पूनम तथा प्रो0 उषा धुलिया (2016) : पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले तथा भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन,गोल्डेन रिसर्च थॉट जर्नल, 6(6), 1–3, 25 अप्रैल 2019, www.isrj.in,